

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 10, 9 उद्धार घटनाएँ, भाग 2, आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ, अवतार, और यीशु का पाप रहित जीवन

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और मसीह के उद्धार कार्यों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है, मसीह की नौ उद्धार घटनाएँ, भाग दो, आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ, अवतार, और यीशु का पाप रहित जीवन।

हम इस बात का अध्ययन जारी रखते हैं कि यीशु ने हमें बचाने के लिए क्या किया, उनके उद्धार कार्य, और शायद कई बिंदुओं में से मेरा मुख्य बिंदु यह है कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान को एक साथ समझा जाना चाहिए।

यीशु ने खुद ही अपने दो मुख्य उद्धारक घटनाओं की भविष्यवाणी की थी। मरकुस 8:31 में, उसने उन्हें सिखाना शुरू किया कि मनुष्य के पुत्र को बहुत सी पीड़ाएँ सहनी होंगी और पुरनियों और मुख्य याजकों और शास्त्रियों द्वारा अस्वीकार किया जाएगा और मार डाला जाएगा और तीन दिन बाद फिर से जी उठेगा। मरकुस 9:31 और अध्याय 10, श्लोक 33 और 34 भी देखें।

यूहन्ना 10 में यीशु कहते हैं, पिता मुझसे इसी कारण प्रेम करता है, कि मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ। कोई इसे मुझसे नहीं छीनता, बल्कि मैं इसे अपनी इच्छा से देता हूँ। मुझे इसे देने का अधिकार है; मुझे इसे फिर से लेने का अधिकार है।

मुझे यह आदेश मेरे पिता से मिला है। यूहन्ना 10:17 और 18. रोमियों में पौलुस भी यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को जोड़ता है।

यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुएों में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि मन से विश्वास करके धर्मी ठहरता है, और मुँह से अंगीकार करके उद्धार पाता है। रोमियों 10:9 और 10.

कई बार पौलुस यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को अपने मुख्य उद्धारक घटनाओं के रूप में जोड़ता है। मैं इन सभी अंशों को नहीं पढ़ूंगा, लेकिन अगर आप उन्हें खुद देखना चाहें तो मैं उनका उल्लेख करूंगा। रोमियों 4:25, 2 कुरिन्थियों 5:15, फिलिप्पियों 3:10, प्रेरितों के काम 2:22-24, इब्रानियों 1:3, 1 पतरस 1:11। स्पष्ट रूप से, शास्त्र यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को सुखियों में लाता है जब वह उसके उद्धारक कार्य के बारे में बात करता है।

फिर भी, कुल मिलाकर मसीह के नौ उद्धारक कार्य हैं। मैं संक्षिप्त परिभाषाएँ देने जा रहा हूँ ताकि हम एक ही पृष्ठ पर हों। अवतार मरियम के गर्भ में एक अलौकिक गर्भाधान द्वारा परमेश्वर के पुत्र का मनुष्य बनना है।

मसीह का पाप रहित जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक बिना किसी विचार, वचन या कर्म के जीना है। मैं इन दोनों को यीशु द्वारा हमें बचाने के लिए किए गए कार्यों की अनिवार्य पूर्वशर्तों के रूप में मानता हूँ। मुख्य घटनाएँ उसका अवतार और पाप रहित जीवन नहीं हैं, बल्कि उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान हैं।

वे अलग-अलग हैं और फिर भी परमेश्वर की योजना में एकजुट हैं। क्रूस पर चढ़ाया गया व्यक्ति पुनर्जीवित है, और पुनर्जीवित व्यक्ति क्रूस पर चढ़ाया गया व्यक्ति है। दो आवश्यक पूर्व शर्तें, दो मुख्य घटनाएँ, और फिर यीशु ने हमें बचाने के लिए जो कुछ किया उसके पाँच आवश्यक परिणाम।

उनका स्वर्गारोहण जैतून के पहाड़ से ऊपर जाकर पिता के पास उनकी सार्वजनिक वापसी है। उनका सत्र उनके स्वर्गारोहण के बाद परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उनका बैठना है। पेंटेकोस्ट, यहूदी त्योहार, ईसाइयों के लिए मुख्य रूप से एक यहूदी त्योहार के रूप में नहीं बल्कि सही मायने में मसीह के अपने चर्च पर पवित्र आत्मा को उड़ेलने के उद्धार कार्य के रूप में जाना जाता है।

उनकी मध्यस्थता में स्वर्ग में उनकी पूर्ण क्रूस की सेवा और उनके संतों की ओर से उनकी प्रार्थनाओं की निरंतर प्रस्तुति शामिल है। उनका दूसरा आगमन युग के अंत में अपने लोगों को आशीर्वाद देने और अपने शत्रुओं का न्याय करने के लिए महिमा में उनकी वापसी है। इसलिए, मसीह के उद्धार कार्य का हृदय और आत्मा उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान है।

फिर भी, कई बचाव घटनाएँ हैं और मैं बाइबिल की कहानी से नौ प्रमुख घटनाओं को अलग करता हूँ। मसीह के उद्धार कार्य की व्यापकता का क्लासिक कथन जॉन कैल्विन द्वारा मसीह की प्रशंसा के अपने भजन में है। कैल्विन ने लिखा, अगर हम उद्धार चाहते हैं, तो हमें यीशु के नाम से ही शिक्षा मिलती है।

यह उसी का है, 1 कुरिन्थियों 130. अगर हम आत्मा के किसी और वरदान की तलाश करते हैं, तो वे उसके अभिषेक में पाए जाएँगे। अगर हम ताकत की तलाश करते हैं, तो यह उसके प्रभुत्व में निहित है।

अगर पवित्रता है, तो उसके गर्भाधान में। अगर सौम्यता है, तो यह उसके जन्म में दिखाई देती है। क्योंकि उसके जन्म से ही वह हर तरह से हमारे जैसा बना, इब्रानियों 2:17, ताकि वह हमारे दर्द को महसूस करना सीख सके, इब्रानियों 5:2। अगर हम मुक्ति चाहते हैं, तो यह उसके जुनून में निहित है।

यदि दोषमुक्ति, तो उसकी निंदा में। यदि शाप की क्षमा, तो उसके क्रूस में, गलातियों 3:13। यदि संतुष्टि, तो उसके बलिदान में। यदि शुद्धि उसके खून में है।

यदि मेलमिलाप, तो नरक में उसके उतरने में, जिसे कैल्विन ने क्रूस पर नरक की सजा लेने के रूप में समझा। यदि शरीर का दमन, तो उसकी कब्र में। यदि जीवन की नवीनता, तो उसके पुनरुत्थान में।

अगर अमरता, तो उसी में। अगर स्वर्गीय राज्य की विरासत, तो स्वर्ग में प्रवेश। अगर सुरक्षा, तो सुरक्षा।

यदि उसके राज्य में सभी आशीर्वाद प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। यदि न्याय की निश्चित आशा है, तो उसे न्याय करने की शक्ति दी गई है। संक्षेप में, चूंकि उसके पास हर तरह की वस्तुओं का भरपूर भंडार है, इसलिए हमें इसी झरने से पीना चाहिए, किसी और से नहीं।

अब हम मसीह की नौ उद्धारक घटनाओं को एक-एक करके देखना शुरू करेंगे। मसीह का अवतार। अब, यह हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण था कि वह, जो हमारा मध्यस्थ होना था, सच्चा परमेश्वर और सच्चा मनुष्य दोनों हो।

चूंकि हमारे अधर्म ने, हमारे और उसके बीच एक बादल की तरह हमें स्वर्ग के राज्य से पूरी तरह से अलग कर दिया था, इसलिए कोई भी व्यक्ति, जब तक कि वह परमेश्वर का न हो, शांति बहाल करने के लिए मध्यस्थ के रूप में काम नहीं कर सकता था। लेकिन कौन उस तक पहुँच सकता था? आदम की संतानों में से कोई भी? नहीं। अपने पिता की तरह, वे सभी परमेश्वर को देखकर भयभीत थे।

फिर क्या? यदि परमेश्वर की महिमा हम पर न उतरी होती तो स्थिति निश्चित रूप से निराशाजनक होती, क्योंकि उसके पास चढ़ना हमारे बस में नहीं था। इसलिए, मनुष्य के पुत्र के लिए इम्मानुएल बनना ज़रूरी था, यानी हमारे साथ परमेश्वर, इस तरह से कि उसकी दिव्यता और हमारा मानवीय स्वभाव परस्पर संबंध द्वारा एक साथ बढ़ सके। मध्यस्थ का वर्णन करने के लिए, पौलुस ने अच्छे कारण से, हमें स्पष्ट रूप से याद दिलाया कि वह एक मनुष्य है, उद्धारण, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक मध्यस्थ, मनुष्य मसीह यीशु।

केल्विन के संस्थानों से एक और उद्धारण। बेटे को मनुष्य बनना पड़ा क्योंकि उद्धार का कार्य मनुष्य द्वारा मनुष्य के लिए किया जाना था। यह इब्रानियों अध्याय 2 में आश्चर्यजनक रूप से दिखाया गया है। इब्रानियों 2 में, उद्धार का कार्य तीन चित्रों में प्रस्तुत किया गया है।

हमारे पास मसीह दूसरे आदम के रूप में, मसीह विजेता के रूप में, और मसीह हमारे महान महायाजक के रूप में हैं। इब्रानियों 2, भजन 8 से उद्धारण के बाद, एक सृष्टि भजन जो आदम और हव्वा को परमेश्वर द्वारा उसके अधीन शासक होने के महान आशीर्वाद के बारे में बताता है, यदि आप चाहें तो उसके उप-शासक। जिन्हें उसने महिमा और सम्मान के साथ ताज पहनाया।

मनुष्य क्या है कि तुम उसका ध्यान रखते हो, इब्रानियों 2:6, भजन 8 का उद्धारण, या मनुष्य का पुत्र कि तुम उसकी परवाह करते हो। तुमने उसे स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया है। तुमने उसे महिमा और सम्मान का ताज पहनाया है।

तूने सब कुछ उसके पैरों के नीचे कर दिया। संदर्भ में, भजन 8 मसीह के बारे में नहीं बल्कि आदम और हव्वा के बारे में बोल रहा है। और मैं इसे इस तरह से कहता हूँ: अपने अवतार में

चूँकि यीशु दूसरा आदम, एक सच्चा इंसान बन जाता है, वह भजन 8 में कदम रखता है। इसने उसकी भविष्यवाणी नहीं की।

इसमें हमारे प्रथम माता-पिता और ईश्वर की रचना के कारण उनके विशेषाधिकार प्राप्त पद पर ध्यान दिया गया है। उन्हें ईश्वर ने अपनी छवि में बनाया है। लेकिन जब मसीह मनुष्य बन जाता है, तो वह भजन 8 में प्रवेश करता है। यह अब उससे संबंधित है क्योंकि वह आदर्श मनुष्य है, दूसरा आदम।

इब्रानियों के लेखक आगे कहते हैं, अब मैं सब कुछ उसके अधीन कर रहा हूँ, आदम या मानवजाति के अधीन। उसने अपने नियंत्रण से बाहर कुछ भी नहीं छोड़ा। अगर आप चाहें तो परमेश्वर के अधीन आदम एक छोटा सा स्वामी था।

उसके पास प्रभुता थी। उसे परमेश्वर की सृष्टि का दुरुपयोग नहीं करना था। उसे उसकी देखभाल करनी थी।

लेकिन वह इससे ऊपर था। भजन 8 कहता है कि परमेश्वर ने उन सभी चीजों को उसके पैरों के नीचे रख दिया। फिर भी, वर्तमान में, हम सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते हैं, अर्थात् मानवजाति।

लेकिन हम उसे देखते हैं, जो थोड़ी देर के लिए स्वर्गदूतों से कम बनाया गया था, अर्थात् यीशु, मृत्यु की पीड़ा के कारण महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया गया, ताकि परमेश्वर की कृपा से वह सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चख सके। यीशु, सच्चा मनुष्य, ईश्वर-मनुष्य, भजन 8 में कदम रखता है, और अब उसके बारे में कहा जाता है कि जिसने स्वर्गदूतों को बनाया वह स्वर्गदूतों से थोड़ा कम है क्योंकि वह एक इंसान है। और भजनकार भजन 8 की भाषा का उपयोग करता है। यीशु को अब महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया गया है।

आदम और हव्वा सृष्टि के द्वारा ऐसे ही थे। यीशु, अपने शक्तिशाली पुनरुत्थान के द्वारा, अपने लोगों के लिए क्रूस पर मरकर, महिमा और सम्मान से सुशोभित हुए। यह दूसरा आदम है, मसीह के कार्य का नया सृजन विषय।

ध्यान दें कि यह कैसे शुरू होता है। हम उसे देखते हैं, जो थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों से कमतर बनाया गया था। इब्रानियों के लेखक ने दूसरे आदम के रूपक की शुरुआत अवतार के संदर्भ से की है।

भजन 8 की भाषा का उपयोग करते हुए, जिसमें आदम और हव्वा की मूल रचना के बारे में बताया गया था, अब यह परमेश्वर के पुत्र के अवतार के बारे में बताता है। अध्याय 2 में वह जिस दूसरे विषय पर चर्चा करता है, वह है प्रायश्चित। फिर से, वह एक के बाद एक तीन विषयों को जोड़ता है। मुझे लगता है कि मैंने पहले भी यही कहा था।

बाइबल मसीह के कार्य के इन विषयों को आपस में जोड़ती है क्योंकि यह मसीह का एक कार्य है, यह एक मसीह है और मसीह का एक कार्य है, यह एक उद्धार है। और हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि छवियों की बहुलता क्यों है। यह एक बहुत अच्छा सवाल है।

लेकिन बाद में, अभी के लिए, बस ध्यान दें कि यहाँ यह दूसरे आदम की छवि से क्राइस्टस विक्टर की छवि में चला जाता है। श्लोक 14, इसलिए क्योंकि बच्चे भी मांस और खून में हिस्सा लेते हैं, इसलिए वह भी, संदर्भ में पुत्र, उसी तरह से उन्हीं चीजों में हिस्सा लेता है, ताकि मृत्यु के माध्यम से वह उस व्यक्ति को नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान, और उन सभी को छोड़ा जो मृत्यु के भय से आजीवन दासता के अधीन थे। यह मसीह हमारा चैंपियन है, मसीह हमारा विजेता है, न केवल अपने लोगों को मृत्यु के भय से बचाता है बल्कि खुद दुष्ट को हरा देता है।

लेकिन फिर से ध्यान दें कि इब्रानियों के लेखक ने क्राइस्टस विक्टर विषय को कैसे पेश किया। चूँकि परमेश्वर के बच्चे मांस और रक्त में साझा करते हैं, वास्तव में, ग्रीक में रक्त और मांस कहा जाता है, लेकिन आप उस तरह से अनुवाद नहीं कर सकते क्योंकि हम उस तरह से नहीं बोलते हैं। यह अंग्रेजी में मुहावरेदार है, और इसका वही अर्थ है।

चूँकि बच्चे मांस और खून में भागीदार हैं, इसलिए वह स्वयं, पुत्र, भी उन्हीं चीजों में से एक है, ताकि मृत्यु के ज़रिए वह शैतान को नष्ट कर सके और अपने लोगों को छोड़ा सके। मसीह के कार्य के लिए अवतार एक अनिवार्य शर्त है, चाहे वह दूसरे आदम की कल्पना हो, चाहे वह मसीह हमारे चैंपियन के रूप में चित्रित हो, या इब्रानियों की महान पुरोहिती भाषा हो क्योंकि वह छुटकारे की तीसरी तस्वीर है। छुटकारे का इस्तेमाल धर्मशास्त्र में संकीर्ण अर्थ में किया जाता है जिसका अर्थ है छुटकारे की कीमत के आधार पर दासों को खरीदना और उन्हें आज़ाद करना।

इसका प्रयोग मोक्ष के अधिक सामान्य अर्थ में भी किया जाता है, इसलिए मैं इसे यहाँ प्रयोग कर रहा हूँ। यह संकीर्ण छुटकारे का अर्थ नहीं है, बल्कि मोक्ष का व्यापक अर्थ है। तीसरी तस्वीर इब्रानियों के अध्याय 2 की आयत 17 है।

एक अध्याय, दूसरा आदम, क्राइस्टस विक्टर, पुरोहिती रूपांकन। उनमें से हर एक छवि अवतार से शुरू होती है। इसलिए, उसे हर तरह से अपने भाइयों की तरह बनाया जाना था ताकि वह परमेश्वर की सेवा में एक दयालु और वफादार महायाजक बन सके और प्रायश्चित कर सके।

यह उस शब्द के चार उपयोगों में से दूसरा है, रोमियों 3:25, 1 यूहन्ना 2:2, 1 यूहन्ना 4:10। यहाँ इब्रानियों 2:17 में, याजक के रूप में, यीशु अपने लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करता है, और वह भी, क्योंकि उसने दुख उठाया, उन लोगों की मदद करता है जो परीक्षा में पड़ रहे हैं। लेकिन एक बार फिर, उसे हर मामले में अपने भाइयों जैसा बनना पड़ा। यह परमेश्वर के पुत्र के अवतार के बारे में बोलने वाला सुंदर गद्य है।

इब्रानियों 2 में लेखक तीन चित्रों का उपयोग करके मसीह के उद्धार के कार्य को प्रस्तुत करता है। मसीह दूसरा आदम है। मसीह विजेता है।

मसीह हमारे महान महायाजक हैं। लेखक प्रत्येक चित्र का परिचय अवतार के बारे में बताकर देता है। स्पष्ट रूप से, यह यीशु के क्रूस और खाली कब्र के लिए आवश्यक पूर्व शर्त है।

यीशु का अवतार बचाता है। लूका 2.11, खेत में चरवाहे इस चमकदार रोशनी से चौंक जाते हैं। और एक देवदूत, अगर अच्छे भगवान ने स्वर्गदूतों की पूरी टोली भेजी होती, तो वहाँ कुछ मरे हुए चरवाहे हो सकते थे, कुछ कैटेनिक चरवाहे।

तो, वह बहुत ही सज्जन है। एक रोशनी? थॉमस एडिसन ने अभी तक अपना काम नहीं किया था। एक उज्वल प्रकाश, अंधेरे में ईश्वर की महिमा।

यह सुंदर कल्पना है, है न? और वैसे भी, स्वर्गदूत कहता है, डरो मत। मैं तुम्हारे लिए बहुत खुशी की खुशखबरी लेकर आया हूँ। यह सभी लोगों के लिए होगी।

लूका 2:11, क्योंकि आज दाऊद के नगर बेतलेहेम में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है, जो मसीह प्रभु है। इस विवरण का परिचय भी दे रहे हैं, है न? इसके परिचय में, उसे पहले ही उद्धारकर्ता कहा गया है। यह उसके जन्म और फिर उसके उद्धारकर्ता होने की बात करता है।

स्पष्ट रूप से, अवतार उद्धार के उद्देश्य से है। गलातियों 4 :4 और 5, समय की परिपूर्णता में, परमेश्वर ने अपने पुत्र को एक स्त्री से जन्मा भेजा - मरियम और कुंवारी गर्भाधान का संदर्भ।

व्यवस्था के अधीन जन्मे। क्यों? व्यवस्था के अधीन लोगों को छुड़ाने के लिए ताकि हम पुत्रों के रूप में गोद लिए जाने का अधिकार प्राप्त कर सकें। और हमने अभी इब्रानियों 2:14-15 को देखा, क्योंकि बच्चे मांस और लहू में भागीदार हैं।

वह भी, परमेश्वर का पुत्र, जो इब्रानियों 1 में एक दिव्य उपाधि है, ने वही चीज़ें लीं, मांस और लहू, ताकि वह मर सके। स्वर्ग में परमेश्वर प्रायश्चित नहीं कर सकता। पृथ्वी पर परमेश्वर, परमेश्वर-मनुष्य, ने प्रायश्चित किया।

मसीह के उद्धार के लिए अवतार लेना एक अनिवार्य शर्त है। क्या मसीह का अवतार उद्धार करता है? हाँ, लेकिन हमें सावधान रहना होगा। क्या अवतार अपने आप में उद्धार करता है? इसका उत्तर है नहीं।

जब ईश्वर का शाश्वत पुत्र मनुष्य बन जाता है तो मानवजाति को स्वतः ही मोक्ष नहीं मिल जाता। पूर्वी रूढ़िवादिता कभी-कभी इस प्रश्न का उत्तर हाँ में देती है। वे सही रूप से अवतार के चमत्कार पर जोर देते हैं, और हमें भी ऐसा करना चाहिए, और फिर भी यह घटना अपने आप में उद्धार नहीं करती।

यह क्रूस और खाली कब्र के लिए एक अनिवार्य शर्त है। क्या अवतार उद्धार के लिए आवश्यक पूर्व शर्त के रूप में बचाता है? हाँ। केवल एक दिव्य-मानव उद्धारक ही ऐसा कर सकता है।

यदि पुत्र मनुष्य न बनता, तो वह पाप रहित जीवन नहीं जी सकता था, मर नहीं सकता था, और अपने लोगों को छुड़ाने के लिए फिर से जीवित नहीं हो सकता था। वह स्वर्गारोहित नहीं हो सकता था, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर नहीं बैठ सकता था, और पवित्र आत्मा को उंडेल नहीं सकता था। वह हमारे लिए मध्यस्थता नहीं कर सकता था, और वह निश्चित रूप से फिर से नहीं आ सकता था।

फिलिप ह्यूजेस ने अवतार और मसीह के उद्धार कार्य के बीच संबंध को यादगार ढंग से रेखांकित किया है। लेकिन बेथलेहम, जिसे उन्होंने अवतार के दृश्य के रूप में प्रशंसा की है, जितना कि यह असंभव था, पूरी बात असंभव है। भगवान ने दुनिया के महानतम राजाओं को अपने बेटे के जन्म की घोषणा की।

नहीं, चरवाहों को। बेचारे फटेहाल चरवाहों को। किसका चरित्र ऐसा था, इस पर यहाँ विद्वानों में बहस होती है, लेकिन ऐसा लगता है कि उनकी बात को अदालत में स्वीकार नहीं किया गया।

भगवान ने उन्हें अपने बेटे के जन्म के बारे में बताया। ओह हाँ, ओह हाँ। यह भगवान की कृपा को दर्शाता है।

वह दीन-हीन लोगों के पास जाता है, और वे जवाब देते हैं। वे जाते हैं, और फिर वे संदेश फैलाते हैं। प्रभु में हास्य की भावना है।

फिलिप एजकम्बे ह्यूजेस कहते हैं कि बेथलेहम पूरी कहानी नहीं है। वहाँ जो जन्म हुआ वह अपने आप में एक लक्ष्य नहीं था बल्कि एक लक्ष्य तक पहुँचने का साधन था। बेथलेहम जिस लक्ष्य तक पहुँचने का साधन था वह कैल्वरी था।

और जब तक बेथलेहम को कलवरी से सीधे संबंध में नहीं देखा जाता, तब तक इसका वास्तविक उद्देश्य और महत्व छूट जाता है। पालना उस सड़क की शुरुआत थी जो क्रूस की ओर ले जाती थी, और मसीह के आने का उद्देश्य पालने में नहीं बल्कि क्रूस पर पूरा हुआ। इस प्रकार, यीशु ने खुद को मनुष्य का पुत्र घोषित किया और बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में अपना जीवन देने के लिए आया, मार्क 10:45। और सेंट पॉल ने 1 तीमुथियुस 1:15 में घोषणा की कि मसीह यीशु पापियों को बचाने के लिए दुनिया में आया था।

आमीन। मसीह का पाप रहित जीवन प्रायश्चित की दूसरी अनिवार्य शर्त है। डोनाल्ड मैकलियोड ने मसीह के व्यक्तित्व पर अपनी अद्भुत पुस्तक में कहा है कि मसीह की पापहीनता में दो तत्व शामिल हैं।

सबसे पहले, मसीह वास्तविक पाप से मुक्त था। वह अपराध बोध का कोई एहसास नहीं दिखाता। वह कभी भी क्षमा के लिए प्रार्थना नहीं करता।

वह कभी भी अपनी कमियों को स्वीकार नहीं करता। इसके विपरीत, उसने जो कुछ भी किया, सोचा या कहा वह बिल्कुल परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप था। उसने सभी धार्मिकताएँ पूरी कीं,

जैसा कि उसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कहा, मत्ती 3:15। दूसरे, वह जन्मजात पाप से मुक्त था।

उसके अस्तित्व की संरचना में कहीं भी कोई पाप नहीं था। शैतान का उस पर कोई प्रभाव नहीं था। कोई वासना नहीं थी।

पाप के साथ कोई लगाव नहीं था। पाप करने की कोई प्रवृत्ति नहीं थी। भीतर से प्रलोभन की कोई संभावना नहीं थी।

बाहर से? हाँ। भीतर से? नहीं। वह किसी भी तरह से पतित नहीं था, और किसी भी तरह से उसका स्वभाव भ्रष्ट नहीं था।

19वीं शताब्दी तक, यह वस्तुतः ईसाई चर्च की सर्वसम्मत स्वीकारोक्ति थी। डोनाल्ड मैकलियोड सही हैं। जैसा कि हमने बाइबल की बातों को ध्यान में रखते हुए देखा, यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि प्रभु का आने वाला सेवक कोई हिंसा नहीं करेगा और उसके मुँह से कोई छल-कपट नहीं निकलेगा।

परिणामस्वरूप, वह, धर्मी, मेरा सेवक, बहुतों को धर्मी ठहराएगा, और वह उन्हें सहेगा, वह उनके अधर्म को सहेगा। यशायाह 53 आयत 9 और 11। नए नियम के सभी भाग इस बात की गवाही देते हैं कि उस उद्धार कार्य को पूरा करने के लिए, पुत्र/सेवक पाप रहित था।

सुसमाचार। जन्म लेने वाले बच्चे, गेब्रियल ने परमेश्वर की ओर से बोलते हुए, मरियम से कहा कि वे पवित्र, परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे, लूका 1:35। हम किसके पास जाएँ, यूहन्ना कहता है।

प्रेरित। आपके पास अनंत जीवन के शब्द हैं। शायद यह पीटर है, मुझे खेद है।

यूहन्ना 6:68, 69. चेलों में से एक ने यीशु से पूछा, "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं, और हम ने विश्वास किया, और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।" प्रेरितों के काम की पुस्तक।

पतरस सुसमाचार का प्रचार करते समय शब्दों को नहीं तोड़ता। उसके यहूदी श्रोताओं को दृढ़ विश्वास दिलाने की ज़रूरत है, और यार, वह बस उन्हें सामने रखता है। प्रेरितों के काम 3:14 को उद्धृत करें।

लेकिन तुमने पवित्र और धार्मिक व्यक्ति को अस्वीकार कर दिया और एक हत्यारे को अपने लिए देने के लिए कहा। यह बरअब्बा का संदर्भ है। कई बार, यीशु को परमेश्वर का पवित्र सेवक कहा जाता है।

बस एक और संदर्भ। मेरे पास मैक्स के लिए उनमें से बहुत सारे हैं। क्योंकि सचमुच इस शहर में, पतरस ने कहा, वे आपके पवित्र सेवक, यीशु, जिसे आपने अभिषेक किया था, के खिलाफ इकट्ठे हुए थे।

वह पिता से, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस से, अन्यजातियों और इस्राएल के लोगों से प्रार्थना कर रहा है। प्रेरितों के काम 4:27. पौलुस, कम से कम एक जगह, 2 कुरिन्थियों 5:21 में कहता है, हमारे लिए, परमेश्वर ने उसे पाप बना दिया जो पाप को नहीं जानता था, जो पाप को नहीं जानता था।

ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। सामान्य पत्र, इब्रानियों 4:15। हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में दुखी न हो सके, वरन वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।

इब्रानियों 4:15. 1 यूहन्ना 2:1. परन्तु यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह। 1 यूहन्ना 2 1. मैं संदर्भों की संख्या बढ़ा सकता हूँ।

मैं नहीं करूँगा। प्रकाशितवाक्य 3:7. नए नियम के सभी भाग। हम उद्धारकर्ता की पापहीनता और फिलाडेल्फिया में चर्च के स्वर्गदूत की गवाही देते हैं, है न? उद्धारण, पवित्र व्यक्ति के शब्द, सच्चे व्यक्ति जिसके पास दाऊद की कुंजी है, जो खोलता है और कोई बंद नहीं कर सकता, जो बंद करता है और कोई नहीं खोलता।

और फिर यह यीशु के वचनों को बताता है। प्रकाशितवाक्य 3:7। न केवल नए नियम के सभी भाग, पुराने नियम में थोड़ा सा, बल्कि नए नियम के सभी भाग, जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं कि जब उद्धारकर्ता आएगा, तो उसकी पापहीनता की गवाही देंगे। लेकिन यीशु के जीवन के विभिन्न पहलुओं की जाँच करने से एक ही परिणाम मिलता है: जन्म से पहले उसकी धार्मिकता।

जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर ने घोषणा की कि वह परमेश्वर का पवित्र पुत्र होगा। लूका 1:35. एक शब्द में, यशायाह भविष्यवाणी करता है कि उसके मुँह में कोई छल नहीं था।

यशायाह 53 9. इसी तरह, पतरस ने भी यशायाह को उद्धृत करते हुए पुष्टि की कि उसके मुँह से कोई छल की बात नहीं निकली। जब उसे बुरा-भला कहा गया, तो उसने बुरा-भला नहीं कहा और न ही बदला। जब उसे दुख सहना पड़ा, तो उसने धमकी नहीं दी।

1 पतरस 2:22 23. जैसा कि हमने देखा, पौलुस लिखता है, कि जो पाप से अज्ञात था, उसे उसने हमारे लिये पाप ठहराया। इसका अर्थ है अनुभवात्मक रूप से, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

2 कुरिन्थियों 5:21. पतरस ने घोषणा की कि उसने कोई पाप नहीं किया, बल्कि अपने आप को उस पर छोड़ दिया जो सच्चा न्याय करता है। 1 पतरस 2:22 23.

परमेश्वर के पुत्र के सांसारिक जीवन का हर पहलू उसकी पापहीनता, उसके चरित्र को प्रदर्शित करता है। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि नया नियम बार-बार उसके शुद्ध और पवित्र चरित्र की गवाही देता है। पवित्र और धर्मी, प्रेरितों के काम 3 14.

आपका पवित्र सेवक यीशु, प्रेरितों के काम 4:27, 4:30. धर्मी जन, प्रेरितों के काम 7:52, प्रेरितों के काम 22:14. धर्मी जन, 1 पतरस 3:18.

यीशु मसीह धर्मी है, 1 यूहन्ना 2:1। पवित्र जन, 1 यूहन्ना 2:20। वह शुद्ध है, 1 यूहन्ना 3:3। उसमें कोई पाप नहीं है, 1 यूहन्ना 3:5 और 6। वह धर्मी है, 1 यूहन्ना 3:7। पवित्र जन, प्रकाशितवाक्य 3:7। मैं अपना मामला यहीं समाप्त करता हूँ। विभिन्न गवाह, यानी विभिन्न व्यक्तित्व, अच्छे और बुरे, यीशु मसीह की नैतिक ईमानदारी की गवाही देते हैं।

दुष्टात्माएँ यीशु से भिड़ जाती हैं, एक व्यक्ति के भीतर की अशुद्ध आत्मा चिल्लाती है, नासरत के यीशु, हमसे तुम्हारा क्या लेना-देना? क्या तुम हमें नष्ट करने आए हो? मैं जानता हूँ तुम कौन हो। विडंबना यह है कि दुष्टात्माएँ बेचारे शिष्यों से बेहतर जानती हैं। तुम परमेश्वर के पवित्र जन हो, मरकुस 1:24।

चेले, पतरस, बारहों के प्रवक्ता, यूहन्ना नहीं, परन्तु पतरस ने कहा, हे प्रभु, हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तेरे पास हैं, और हम विश्वास करते हैं और जान गए हैं कि तू परमेश्वर का पवित्र जन है, यूहन्ना 6 68 69। शत्रु, जब यहूदी नेताओं के साथ मौखिक लड़ाई में उलझे हुए थे, जो उसे पत्थर मारकर मार डालना चाहते थे, तो यीशु कहते हैं, तुम में से कौन मुझे पाप का दोषी ठहराता है? रोमियों 8 46। और आप शर्त लगा सकते हैं कि अगर वे कर सकते, तो वे करते।

चाहे मनुष्य हों या पतित स्वर्गदूत, चाहे मित्र हों या शत्रु, गवाह इस बात पर सहमत हैं कि नासरत का यीशु परमेश्वर का पवित्र जन है। शास्त्र न केवल यीशु की पापहीनता से बल्कि उसकी उद्धारक उपलब्धि से भी जुड़ता है। फिलिप ह्यूजेस के वाक्पटु शब्दों को सुनें।

यीशु की पूर्णता केवल होने की पूर्णता नहीं थी, बल्कि बनने की पूर्णता थी। पूर्व को बाद वाले द्वारा बनाए रखा गया था, क्योंकि, धीरे-धीरे, उन्होंने जो था और जो होना था, उसे समेकित किया। लेकिन किसी भी अर्थ में यीशु की पूर्णता अपूर्णता से पूर्णता की ओर प्रगति नहीं थी।

अगर वह कभी भी अपूर्ण होता या क्षण भर के लिए भी अवज्ञा में पड़ जाता, तो वह जो कुछ भी करने के लिए आया था, उसमें असफल हो जाता। वह पहला आदम बन जाता। दूसरों को बचाने में अक्षम होने के कारण, उसे खुद भी उद्धार की आवश्यकता होती।

बेशक, वह श्रद्धापूर्वक बोलता है। अवतार एक आरामदायक भ्रमण या एक आनंददायक अंतराल नहीं था। हम उस व्यक्ति के लिए पीड़ा और पीड़ा में इसकी अत्यधिक कीमत पर पर्याप्त रूप से विचार नहीं करते हैं जो ईश्वर का शाश्वत पुत्र है, एक छवि जिसके बाद हम बने हैं, न ही हम खुद को याद दिलाते हैं, जैसा कि हमें लगातार करना चाहिए, कि आज्ञाकारिता की पूर्णता पीड़ा के माध्यम से स्थापित की गई थी, उसके लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए, हम मनुष्यों के लिए और हमारे उद्धार के लिए।

फिर से, प्राचीन धर्मग्रंथों से उद्धरण देते हुए, मसीह की पापहीनता का क्या धार्मिक महत्व है? शास्त्र हमें बताता है, यशायाह हमें पहले ही बता चुका है, 53:11, अपने ज्ञान से धर्मी, मेरा सेवक, बहुतों को धर्मी ठहराएगा, कैसे? वह उनके अधर्म का बोझ उठाएगा। यशायाह 53:11, यशायाह

पहले ही यीशु की पवित्रता और उसके प्रायश्चित को जोड़ देता है। हमारे लिए, परमेश्वर ने उसे पाप बना दिया जो पाप नहीं जानता था ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें।

हमारा औचित्य यीशु की अपनी धार्मिकता पर निर्भर है। बेशक, उनकी मृत्यु पर भी। अब मैं जो बात कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि यीशु के उद्धारक प्रायश्चित के लिए दो आवश्यक पूर्व शर्तें हैं: उनका अवतार और उनका पापहीन होना।

मैं पवित्र शास्त्र से इन उद्धारणों के साथ दिखा रहा हूँ कि पवित्र शास्त्र स्वयं उसके पापहीन होने को प्रायश्चित की पूर्व शर्त मानता है। हमारे पास ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों के साथ सहानुभूति न रख सके, बल्कि ऐसा है जो हर तरह से हमारी तरह परीक्षा में आया है, फिर भी पाप रहित है। तो आइए हम विश्वास के साथ अनुग्रह के सिंहासन के निकट जाएँ, ताकि हमें दया मिले और ज़रूरत के समय मदद करने के लिए अनुग्रह मिले।

यीशु की पापहीनता को हम कभी नहीं जान पाएंगे। शैतान आमने-सामने, ऐसा कभी न हो, हे प्रभु, कभी पाप न किया हो। यह उसे हमारे महान महायाजक के रूप में योग्य बनाता है जो हमें ज़रूरत पड़ने पर अनुग्रह और दया देगा।

पतरस ने लिखा कि मसीह ने भी पापों के कारण एक बार दुख उठाया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी, ताकि हमें परमेश्वर के पास ले जाए। मसीह की धार्मिकता उसे हमारा विकल्प बनने के योग्य बनाती है, 1 पतरस 3:18। लेकिन यदि कोई पाप करे, तो हमारे पास पिता के पास एक अधिवक्ता है, एक अधिवक्ता, यीशु मसीह धर्मी, 1 यूहन्ना 2:1। तुम जानते हो कि वह पापों को दूर करने के लिए प्रकट हुआ, और उसमें कोई पाप नहीं है, 1 यूहन्ना 3:5 के अनुसार। यह यशायाह से लेकर इब्रानियों के लेखक पॉल, पीटर, जॉन और बाइबल की आखिरी किताब में, जो मुझे भी लगता है कि जॉन द्वारा लिखी गई थी, यीशु की धार्मिकता की घोषणा की गई है और उसकी बचत उपलब्धि से जुड़ी हुई है। इसलिए, अलग-अलग संदर्भों में, अलग-अलग शब्दों के साथ, अलग-अलग समय पर और अलग-अलग उद्देश्यों के लिए, यशायाह, इब्रानियों के लेखक पॉल, पॉल और जॉन, पीटर और जॉन सभी एक ही संदेश की घोषणा करते हैं।

केवल परमेश्वर का पापरहित पुत्र ही संसार का उद्धारकर्ता हो सकता है। रॉबर्ट लैथम ने इस संदेश का सारांश सही ढंग से दिया है, अंतर्दृष्टिपूर्ण ढंग से, सही ढंग से, लेकिन अंतर्दृष्टिपूर्ण ढंग से। नए नियम में यीशु की पापहीनता की लगातार गवाही है।

मनुष्य के लिए, नए नियम के लेखक इसे विवाद से परे मानते हैं। निश्चित रूप से, यीशु पूरी तरह से मनुष्य है, और जब तक वचन देहधारी नहीं हो जाता, तब तक कोई उद्धार नहीं हो सकता। लेकिन क्या पूर्ण और सच्ची मानवता के लिए पाप की आवश्यकता थी? इसका उत्तर अवश्य ही नहीं होगा।

जिस तरह आदम को बनाया गया था, वह पूरी तरह से मनुष्य था, फिर भी वह पाप रहित था, उसी तरह दूसरे आदम ने, जिसने आदम की जगह ली, न केवल कुंवारी गर्भाधान के कारण पाप रहित जीवन शुरू किया, बल्कि पाप रहित जीवन जारी रखा। आदम को एक सुंदर बगीचे में प्रलोभन

दिया गया और वह हार गया। दूसरे आदम को एक उदास रेगिस्तान में प्रलोभन दिया गया और फिर भी वह जीत गया।

मत्ती 4:1 से 10. लूका 4:1 से 12. पुनः, हमारे उद्धार का अंतिम लक्ष्य पाप और उसके परिणामों से अंतिम छुटकारा माना जाता है।

जीवन और धार्मिकता मृत्यु और दण्ड की जगह ले लेंगे। क्या हम इसके लिए पूर्ण मानव से कम हो जाएंगे? वास्तव में, इसका उल्टा सच होगा। हम पुरुष और महिला के रूप में परिपूर्ण हो जाएंगे, भगवान की छवि में फिर से बनाए जाएंगे।

नए नियम में यह धारणा कि मसीह की सच्ची मानवता में पूर्ण पापहीनता शामिल है, संपूर्ण बाइबल की बुनियादी मानवशास्त्रीय और उद्धार संबंधी शिक्षा के साथ सामंजस्य में है। अर्थात्, यह बाइबल के मानवता के सिद्धांत के साथ फिट बैठता है और मसीह के लिए अपना उद्धार कार्य करने के लिए आवश्यक है। वास्तव में, यीशु का अवतार और पाप रहित जीवन आदम के पतित पुत्रों और पुत्रियों के उद्धार के लिए आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ हैं।

उद्धार के कार्य को पूरा करने के लिए अवतार लेना ज़रूरी था। अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए परमेश्वर के पुत्र का मनुष्य बनना ज़रूरी था। इसी तरह, उद्धार को पूरा करने के लिए मसीह को भी पाप रहित जीवन जीना था।

पापी पापियों को बचाने में असमर्थ है। केवल एक पापरहित उद्धारकर्ता ही ऐसा कर सकता है। इस संबंध में, प्रभु यीशु का पापरहित जीवन बचाता है, जैसा कि जॉन स्टॉट ने जोर दिया है, और मैं उद्धृत करता हूँ, "उनकी आज्ञाकारिता उनके उद्धार कार्य के लिए अपरिहार्य थी।

क्योंकि जैसे एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।" रोमियों 5:19. अगर उसने परमेश्वर की इच्छा के मार्ग से एक इंच भी विचलित होकर अवज्ञा की होती, तो शैतान को बढ़त मिल जाती और उद्धार की योजना विफल हो जाती।

लेकिन यीशु ने आज्ञा का पालन किया और शैतान को परास्त कर दिया गया। इस प्रकार, उसने न तो परमेश्वर की अवज्ञा करने, न ही अपने शत्रुओं से घृणा करने, या संसार की शक्ति का अनुकरण करने से इनकार कर दिया। अपनी आज्ञाकारिता, अपने प्रेम और अपनी नम्रता के द्वारा, उसने दुष्ट शक्तियों पर एक महान नैतिक विजय प्राप्त की।

वह स्वतंत्र, अदूषित, समझौता रहित रहा। शैतान उस पर कोई पकड़ नहीं बना सका और उसे हार माननी पड़ी।"

इस जीवन में अवतार और मसीह जितने भी अपरिहार्य हैं, वे अपने आप में उद्धार नहीं करते। बल्कि, वे मसीह की केंद्रीय उद्धारक घटनाओं, उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए आवश्यक पूर्वशर्तें हैं। ये घटनाएँ हमारे अगले व्याख्यान का विषय होंगी।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और मसीह के उद्धार कार्यों पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है, मसीह की नौ उद्धार घटनाएँ, भाग दो, आवश्यक पूर्वपेक्षाएँ, अवतार, और यीशु का पाप रहित जीवन।